Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 6, October-2021, ISSN 2230-7540

# दार्शनिक विचार एवं जन शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रतिपादन में पाओलो फ्रेरे का योगदान

**Dr. S. K. Mahto[1]* Dr. Rani Mahto[2]**

[1] Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

[2] Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

***सारांश -*** *वैश्विक स्तर पर पाओलो फ्रेरे 19वीं शताब्दी के शिक्षाविदों और दार्शनिकों में अव्वल थे। वे काण्ट, फिट्टे, शैलिंग, हीगल और जॉन डी.वी. आदि दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों से अत्यधिक प्रभावित थे। उनका मानना था कि विश्व के मानवों का उत्थान तबतक संभव नही है जब तक उन्हें वास्तविक ज्ञान से परिचित नहीं किया जाये। इसकें लिए वे चाहते थे कि विश्व के समस्तदेशों में एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम का आयोजन हों जिसमें जन सामान्य के लिए भी शिक्षा की व्यवस्था हो। मनुष्य के कार्यों की परिधि अविभाज्य है तथा उसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक आदि विभिन्न वर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता है यही कारण है कि पाओलो फ्रेरे के अर्थशास्त्र में व्यक्तिवाद, समाजवाद तथा नैतिकता का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। उनका कहा था कि समाज के हर वर्ग यथा किसान, मजदूर, दलित, कर्मकार, युवा वर्ग आदि सभी को जीवन के बहुआयामी पहलुओं की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे समाज के सभी वर्गों को आगे बढने का अवसर प्राप्त हो सके और सभी लोग खुशहाल जिन्दगी जी कर अपने राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकें।*

***कुंजी शब्द -*** *पाओलो फ्रेरे, दार्शनिक विचार, जन शिक्षा सिद्धान्तों के प्रतिपादन में योगदान*

----------X----------

## भूमिका

वैश्विक स्तर पर पाओलो फ्रेरे 19वीं शताब्दी के शिक्षाविदों और दार्शनिकों में अव्वल थे। वे काण्ट, फिट्टे, शैलिंग, हीगल और जॉन डी.वी. आदि दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों से अत्यधिक प्रभावित थे। उनका मानना था कि विश्व के मानवों का उत्थान तब तक संभव नही है जब तक उन्हें वास्तविक ज्ञान से परिचित नहीं किया जाये। इसकें लिए वे चाहते थे कि विश्व के समस्त देशों में एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम का आयोजन हों जिसमें जन सामान्य के लिए भी शिक्षा की व्यवस्था हो। इस जन शिक्षा के अन्तर्गत उन सभी लोगों को सम्बिलित किया जाये जो साक्षर नही है। जब तक सभी वर्ग के जन सामान्य शिक्षित नहीं होगें न तो मानव जाति का विकास होगा और न राष्ट्र का अस्तु जन शिक्षा से सम्बन्धित उन्होंने कई बातों पर बल देने का कार्य किया।

पाओलो फ्रेरे के अनुसार मनुष्य जो कि क्रियाएँ या व्यवहार का आचरण करता है उसमें पीछे दूसरी आवश्यकताएँ निहित होती है तथा मनुष्य का प्रत्येंक कार्य किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति वातावरण के साथ जो प्रतिक्रिया करता है, वही प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रतिक्रिया है। यह प्रतिक्रिया करने वाला किशोर, किशोरी, पुरूष, नारी, मजदूर प्रौढ नारी पुरूष आदि कोई भी हो सकता है। अर्थात जब प्रति क्रिया करने का अधिकार सभी को है, और प्रत्येंक प्रतिक्रिया में शिक्षा निहित है तो सभी प्रति क्रिया करने वाले व्यक्ति को शिक्षा की आवश्यकता हुई कि नहीं।

## पाओलो फ्रेरे के दार्शनिक विचार-

### एकता का सिद्धान्त

पाओलो फ्रेरे एक ऐसा विचारक है जो शिक्षा को ब्रह्माण्ड विकास-प्रक्रिरया का एक महत्वपूर्ण अंग एवं माध्यम मानता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति 'आत्म-चेतन-व्यक्ति (Self-Conscious-Man) बनता हैं-ऐसा मनुष्य जिसकी समस्त क्षमताएँ प्रकृति एवं समाज के साथ समन्वित होकर कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा ही सम्पूर्ण मनुष्य-जाति प्राकृतिक एवं पशु-जीवन से उपर उठती है। पाओलो फ्रेरे को मनुष्य जाती

www.ignited.in

के अबाध असीम विकास में अपरिमित निष्ठा है, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड विकासशील है-पूर्ण होने की प्रक्रिया में हैं।

फ्रेडरिक एबी के शब्दों में पाओलो फ्रेरे मुख्य आधुनिक चिन्तक था जिसने शिक्षा को ब्राह्मण्ड के विकास के घटक के रूप में देखा। उसका धार्मिकों के ईश्वर और दार्शनिकों के चरम सत्ता से प्रारम्भ होता हैं।

इन सृष्टि प्रक्रिया का एक संचालक है, क्योंकि कोई भी क्रिया कर्ता के अभाव में नही हो सकती है। यही कर्ता स्वयं में पूर्ण है, आत्मा है। भौतिक जगत् में यह कर्ता भौतिक शक्ति के रूप में व्याप्त है और चेतनायुक्त मनुष्य में 'चिन्तन-शक्ति' के रूप में। दोनों में वही कर्ता है। क्राउस ने इसी को 'समग्र-अंश-सम्बन्ध' (Part-whole-Relation) का नाम दिया है। पाओलो फ्रेरे इसी को अनेक में व्याप्त एकता के नाम से पुकारते है। प्रत्येक वस्तु स्वयं में पूर्ण है किन्तु एक वृहत समग्र का अंश भी हैं। उदाहरण के लिए हम अँगुली को ले। एक अंगुली स्वयं में पूर्ण है, किन्तु बाँह का अंश है, बाँह स्वयं में पूर्ण है किन्तु हाथ का अंश है, हाथ पूर्ण होते हुए भी शरीर का अंश है और शरीर- प्राणी जगत् का और प्राणी-जगत्-ब्रह्माण्ड का, और ब्रह्माण्ड-ईश्वर का अंश है। यह ईश्वर ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त 'एकता' है, जो अपनी एकता कायम रखकर भी अनेकरूपता हो सकता है।

भौतिक जगत् में ही नहीं, पाओलो फ्रेरे की यह एकता मानसिक जगत् के क्षेत्र में भी मिलती है। मनुष्य एक मनः शारीरिक प्राणी है- मन, शरीर से भिन्न नहीं है। उसकी समस्त क्रियाएँ मनःशारीरिक हैं- उसमें कार्यकारी एकता है। विशेषतः उत्पादन क्रियाओं में यह मन और शरीर की एकता अधिक स्पष्ट दिखायी पडती है। जहाँ भी उत्पादन हुआ है, मन-शरीर के द्वारा हुआ है। आधुनिक विज्ञान में भी मन स्नायु-संस्थान की केन्द्रीय क्रिया है। स्नायु-संस्थान एक शारीरिक भौतिक एकाई है। पूर्णतः स्थूल-वस्तु के निर्माण में भी व्यक्ति की स्मृति, कल्पना, प्रत्यक्षीकरण, तक्रना एवं सकल्प के साथ स्नायु, पेशियाँ, इन्द्रियाँ एवं सारा शरीर क्रिया करता है। उत्पादक क्रियाओं को पाओलो फ्रेरे ने इसलिए बहुत अधिक महत्व दिया है।

संस्कृति भी मनुष्य की परम्परागत एकता का प्रतीक है। संस्कृति सामाजिक जीवन का ही परिणाम है- विशेषतः एकाकी जीवन के लिए जीवन का कोई महत्व नहीं है। व्यक्ति स्वयं में पूर्ण है किन्तु समाज का अंग है और उसे मूल्यों की सृष्टि करनी पडी है। संस्कृति का दूसरा अंग मनुष्यके जीवन के साधनों भी भौतिक सम्पन्नता है। आप जानते है कि आज जीवन के समष्टिमूलक मूल्यों एवं भौतिक साधनों के विकास में एकता नहीं है और यही कारण है कि हमारी संस्कृति संकट (आणुविक युद्ध) में हैं। हमारी सप्पूर्ण ज्ञान-राशि में भी एक अन्तर्निहित एकता है।

**विकास का सिद्धान्त**

समस्त सृष्टि में 'एकता' है क्योंकि उसके प्रत्येक अंश में ईश्वर का अव्यक्त स्वरूप विद्यमान है। कहना यों चाहिए कि आन्तरिक-सक्रिय-शक्ति जिसे पूर्ण ईश्वर आदि के नाम दिये गये हैं व्यक्त होने की आवश्यकता पूर्ति के लिए विविध प्रकारों के अनेकानेक आकारों एवं शरीरों को धारण करता है। विकास का मूल -सिद्धान्त भी यही हैं- "आन्तरिक क्रियाशीलता"। जिस प्रकार पौधा बीज के लघु-रूप में सम्पूर्ण वृक्ष को छिपाये हुए है और उचित धरातल एवं जलवायु पाते ही भीतर से बाहर की ओर प्रस्फुटित होने लगता है, इसी कारण मनुष्य भी भीतर से ही स्वसंचालित क्रिया के द्वारा उपयुक्त वातावरण पाकर विकसित हो जाता है। चाहे कौशल का विकास हो- चाहे नैतिक गुणों का, विकास का नियम एक ही है-"सृष्टि की शक्ति का आत्म-प्रेरित, ब्राह्मवर्ती (Extermal) उत्सोन्मुखी (Reactiong Higher Goals), क्रमिक (sytematic) विकास। पाओलो फ्रेरे का यह नियम विकास का गत्यात्मक (Dynamic) नियम है क्योंकि वह विकास को क्रिया (Thesic) प्रतिक्रिया (Anti- Thesis) एवं समन्वय (Synthesis) के स्तरों द्वारा बढती हुई क्रिया के रूप में देखता हैं। विकास का द्वन्द्वात्मक ढंग हीगल के प्रभाव का फल है।

मूलतः विकास के सभी परिणाम मूल होने चाहिए, क्योंकि वे अन्तर्शक्ति के प्रस्फुटन के परिणाम है। सर्वेश्रवादी होने के नाते पाओलो फ्रेरे मनुष्य की जन्मजात उच्चता-देवत्व-में विश्वास रखता है। उसे विकारों से मुक्त मानता है। किन्तु फिर पाप या विकार का उदय कहाँ से हुआ? फ्रोबेल का उतर है, मनुष्य के प्रत्येक विकार एवं पाप के नीचे एक अवदमित या विकृति भलाई छिपी है। इसीलिए किसी भी विकार को दूर करने का एक ही उपाय है कि मनुष्य की मौलिक उच्चता, जो अवदमित हो चुकी है, खोज निकाली जाये।"

पाओलो फ्रेरे के अनुसार मनुष्य का स्वभाव बडा ही प्रगतिशील एवं सृजनशील है। यह प्राणी किसी न किसी रूप में अपने को निरन्तर अभिव्यक्त करना चाहता है। उसकी अभिव्यक्ति सदैव आत्मप्रेरित, स्वयंचालित क्रिया के माध्यम से होती रहती है। मनुष्य क्रिरया क्यों करता है, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी प्रतिभा के अनुरूप निर्मित किया है, अतः ईश्वर की भाँति वह भी सृष्टा है, निरन्तर उत्पादन-क्रिया में अनुरक्त कर्त्ता हैं। 'मनुष्य की शिक्षा' में पाओलो फ्रेरे ने यह भी लिखा है कि- "इस निराधार भ्रम को कि मनुष्य क्रियाशील एवं उत्पादन करने वाला इसलिए है, जिससे वह अपने को जीवित रख सके, भोजन पा सके, कपडें और आवास ले सके, सहन किया जा सकता है, किन्तु उस भ्रम का प्रचार नहीं करना चाहिए।" वस्तुतः वह क्रियाशील इसलिए है कि उसका दैवी-स्वभाव

www.ignited.in

आकार पा सके और इस प्रकार वह ईश्वर के बाहम होने के काम में लग सके। पाओलो फ्रेरे के शिक्षा का यह आधारभूत सिद्धान्त है।

**जन शिक्षा**

पाओलो फ्रेरे ने जन शिक्षा अभियान के शैक्षिक प्रसार हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यों का संचालन किया। पाओलो फ्रेरे यह भी चाहते थे कि प्रत्येक राष्ट्र में ऐसी शिक्षा व्यवस्था का प्रचलन हों जिसमें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सहयोग, प्रेम तथा सहानुभूति का संचार हो और जिससे सर्वन शान्ति और मातृत्व का विकास हो क्योंकि आधुनिक काल में सुविधापरस्त और आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग नहीं चाहते कि किसान, मजदूर सेवक, दुर्बल वशं के लोग तथा दलित वर्ग के लोग शिक्षित हो क्योंकि वे स्वयं के स्वार्थ में इतने लीन हो चुके है कि वे दूसरे को कष्ट पहूँचाने में जरा भी संकोच नही करते है। व्यक्ति अनेक मानसिक यातनाओं से ग्रसित है, वैज्ञानिक और तकनीकि प्रगति के बाद भी मानव को मानसिक शान्ति नहीं मिल रही है। इसका कारण मानवतावादी जनशिक्षा का अभाव है। पाओलो फ्रेरे ने जिस मानवतावादी विचार धारा और शिक्षा को अपनाया उसमें आज के किसन, मजदूर, दलित, मुस्लमान के साथ-साथ अन्य जन समुदाय के लोग शामिल है तथा यह मानवीय प्रेम व न्याय पर आधारित है।

पाओलो फ्रेरे ने जन शिक्षा अभियान के शैक्षिक प्रसार हेतु विभिन्न कार्य क्रमों का संचालन किया साक्षरता प्रसार के अन्तर्गत जन शिक्षा के लिए उन्होंने 1968 ई. में एक प्रस्तक का विमोचन किया। जिसका नाम दलितों का शिक्षण विज्ञान है। इस पुस्तक के माध्यम से पाओलो फ्रेरे ने विभिन्न साक्षरता कार्यक्रमों के द्वारा अपने जन शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक सिद्धान्तों को लिखित रूप दिया। उन्होंने दलितों, किसानों, मजदूरों आदि को तीसी दूनियाँ बताया तथा उनके विकास, उत्थान तथा शैक्षिक जागरूकता की बात कही। उन्होंने मानवीय शिक्षा के विचार द्वारा उन्हें शिक्षित एवं साक्षर करने का कार्य करना प्रारम्भ किया। साओ-पालो नगर के शिक्षा सचिव के पद जब वे नियुक्त हुए तब इस पद पर आसीन रहते हुए उन्होंने विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था को सुधार के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील रहे साथ ही साथ जन शिक्षा से सम्बन्धित निम्नलिखित कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो मानवीयता के साथ-साथ शिक्षा जगत के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ हैं।

**प्रौढ़ शिक्षा**

पाओलो फ्रेरे के अनुसार प्रौढ़ों के लिये भी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। इस शिक्षा के द्वारा प्रौढों को साक्षर कर के शिक्षा का लक्ष्य लिखना-पढ़ना सीखाने के साथ ही उन्हें समाजोपयोगी ज्ञान प्रदान करना चाहिए। ये साक्षर होकर कोई धन्धा कर सकें तथा उनकी मुख्य आवश्यकताओ की पूर्ति होती रहे और उन्हें पढ़ना-लिखना आ जायें। जनसाधारण की निरक्षरता एक कलंक है, और यह मिटना चाहिए। अवश्य ही साक्षरता आन्दोलन का आदि और अन्त वर्णमाला के ज्ञान के साथ ही नहीं होना चाहिए। यह उपयोगी ज्ञान के प्रचार के साथ-साथ चलनी चाहिए। जहाँ उपेक्षा की है वहाँ निरक्षरों को लिखना-पढ़ाना सीखाकर ही संतोष मान लिया है। प्रौढ़ शिक्षण मुझे सौंप दिया जाय तो मैं अपने प्रौढ़ विद्यार्थियों को सबसे पहले अपने देश की महता और विशालता का भाव जागृत करूँगा और इसे गाँव-गाँव तक पहुँचाने का काम करूगा। देहातों में जो अज्ञानता छा रहा है उसका हमें कोई ख्याल नहीं। देहाती लोगों को विदेशी शासन और उसकी शिक्षा में कुछ भिन्नता हो सकती है। "स्त्री-पुरूष के लिए समान अंश रहता है। गुण विकास के नियम भी दोनों के लिए समान ही लागू होते हैं। इसे ध्यान में रखकर मैं तो कहता हूँ कि स्त्री-पुरूष को समान शिक्षा मिलनी चाहिए और साथ-साथ मिलनी चाहिए।" इस प्रकार पाओलो फ्रेरे ने प्रौढ शिक्षा को अधिक विस्तार प्रदान करने का सुझाव दिया है।

**नारी शिक्षा**

किसी भी देश की संस्कृति में स्त्री का स्थान उच्च रहा है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में स्त्रियांे को यथोचित प्रतिष्ठा दी गयी थी, परन्तु कालान्तर में कुछ ऐसी रूढियाँ जुड़ती गयी कि स्त्रियों को अक्षम अबला एंव मात्र भोग की सामग्री मान लिया गया। पाओलो फ्रेरे ने समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति जान कर दुःख के साथ कहा है कि "जब तक स्त्रियाँ हमारे लिये भोग की साम्रगी और रसोई करने वाली बनी रहकर, हमारी जीवन सहचरी, अर्धांगिनी और दुःख-सुख की साझेदार नहीं बनती तब तक हमारे सारे प्रयत्न मिथ्या जान पडते हैं। "पुरूषों की तरह स्त्रियों को भी समानता का अवसर मिलना चाहिए।" अतः उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा में सुधार लाने और उनके उत्थान के साथ-साथ समग्र समाज के उन्न्यन हेतु स्त्री शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया है और योजना को तैयार करने में बुनियादी बातों को ध्यान में रखने को आग्रह किया है।

www.ignited.in

### प्रौढ नारी शिक्षा

अपने देश में अशिक्षित बालिकाओं और प्रौढों की परिस्थियों का गंभीरता से अवलोकन करने के पश्चात् पाओलो फ्रेरे ने प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी अपना विचार प्रस्तुत किया है। "भारतीय समाज में बालक और प्रौढ़ दोनों को अभी बहुत शिक्षा देना बाकी है। उनमें अधिकतर लोग व्यापार रोजगार में व्यस्त रहते दिखाई देती है। इसलिए उनका दिन में पढना संभव नहीं होता। संसार के सभी नगरों में रात्रि में अध्ययन करने के लिए पाठशालाएँ होती हैं। इसलिए पढ़ने की भावना वाले के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है कि जिसको पढ़ाने की इच्छा हो उसे पढ़ने की ओर आकृष्ट करें।" वे अशिक्षित प्रौढ़ों की भी शिक्षा प्रदान करना चाहते थे, जिसके लिए साधन की एक बड़ी समस्या थी, परन्तु उन्होंने बिना कोई धन खर्च किये समाधान प्राप्त कर दिया था। पाओलो फ्रेरे की तरह भारतीय शिक्षाविद् वनोबा भावे जी भी नारी शिक्षा पर ध्यान देने के लिये निर्देशित किया था। उनका मत है कि कुछ कार्य विशेष सिलाई, कढ़ाई, कताई, चित्रकला आदि वे अपेक्षाकृत करती हैं जिनका उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और सिलाई, कढ़ाई, भोजन बनाना आदि कार्य को उनके लिए सुरक्षित कर दिया जाना चाहिए।

पाओलो फ्रेरे ने स्त्रीयों के लिए अलग पाठशालाओं खोलने की योजना प्रस्तुत किया था। उन पाठशालाओं में अंग्रेजी की शिक्षा प्रदान करने का कोई प्रावधान नहीं था। पाओलो फ्रेरे के अनुसार स्त्री शिक्षा को कार्य विभाजन का आधार अवश्य दिया जाना चाहिए।

### लोक शिक्षा

प्रौढ़ शिक्षा और लोक शिक्षा को कुछ लोग समानअर्थी मानते हैं। लेकिन लोक शिक्षा प्रौढ़ शिक्षा से थोड़ा भिन्न है। साहित्य में लोक शब्द का शाब्दिक अर्थ सामान्यता जनता अथवा जन समाज। लोक शिक्षा का वास्तविक अर्थ सच्चे धर्म और सामाजिक कर्म के प्रति लोगों को जागरूक करना होता है साथ ही साथ उसे इस योग्य बनाना होता है कि उनके बीच सामाजिक, राजनीतिक चेतना का सद्भावपूर्ण का विकास हो सके। पाओलो फ्रेरे ने अपने लोक शिक्षा की इस संकल्पना को जन समूह के सामने प्रस्तुत किया था। पाओलो फ्रेरे ने यह महसूस किया था कि किसी भी धर्म के सहारे एकता की बात नहीं की जा सकती, लेकिन अगर लोक शिक्षा का सहारा लिया जाय तो हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही उसे स्वीकारेंगे तथा राष्ट्रीय हित में अपना कार्य करेंगे और समाज में साम्प्रदायिक एकता एवं सद्भाव को बनाये रख सकेंगे। पाओलो फ्रेरे ने लोक-शिक्षण के कार्य को महत्वपूर्ण परन्तु जटिल बताया है "लोक-शिक्षण का प्रश्न बच्चों की शिक्षा से भी अटपटा है। विदेशों से भी हमें थोड़ा ही मार्ग दर्शन मिल सकता है। भारत की स्थिति ही न्यारी है। इस प्रकार हमारे धर्म और कर्म दोनों ढीले पड़ गये है। ऐसी हालत में लोक-शिक्षण कहाँ से प्रारम्भ किया जाए, कहाँ तक उसकी सीमा मानी जाय। लोक शिक्षण का अर्थ रात्रि पाठशाला खोलकर थके हुए मजदूरों को ककहरा सिखाया हो तो नहीं हो सकता।" उन्होंने व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को समुन्नत बनाने का विचार व्यक्त किया है। पाओलो फ्रेरे ने शिक्षित समाज, विशेषकर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को समाज शिक्षा के लिए प्रेरित किया है। वे वास्तव में एक आदर्श समाज-शिक्षक थे, उनकी पुकार से अनेकों भटकें हुये प्राणियों को सम्मान, स्नेह और सत्यता का मार्ग मिला है।

इस तरह लोक शिक्षा के माध्यम से ग्रामवासियों को इस तरह जागरूक और चेनतशील बनायें कि वे स्वयं भी अपने परिवार समाज के प्रति सजग हो जायें और समाज के अन्य सदस्यों को भी राष्ट्र की मुख्यधारा में जुड़ने के लिए उत्प्रेरित करें तथा देश की आजादी की लड़ाई में अपना सहयोग भी प्रदान कर सकें।

### स्वावलम्बन शिक्षा

पाओलो फ्रेरे ने शिक्षा में स्वावलम्बन लाने का समीचीन विचार देश के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए कहा है- "शिक्षा चाहने वाले हर लड़के-लड़कियों को शिक्षा दें सकने के लिए हमें अपने विद्यालयों को अगर बिल्कुल नहीं तो करीब-करीब स्वावलम्बी जरूर बना देना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति दोनों सरकारी सहायता या लड़कों की दी हुई फीस से नहीं, बल्कि लड़कों से ही उद्यम का काम कराकर करनी चाहिए। यह तो केवल औद्योगिक शिक्षा को अनिवार्य कर ही किया जा सकता है। अगर अमेरिक को अपने विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई का खर्च कमा लेने के लिए सुविधा देने की दृष्टि से पाठ्यक्रम बनाना पड़ता है फिर हमारे विद्यालयों और कॉलेजो के लिए कितना अधिक जरूरी होगा कि हम उनके लिए काम ढूँढे? हिन्दुस्तान के युवकों के मन में यह गलत भावना भरने से कि अपनी पढ़ाई या रोजी के लिए अपने हाथों काम करना अयोग्यता है, देश की इतनी बड़ी हानि को रही है। "उन्होंने कर्म द्वारा शिक्षा और स्वावलम्बन को महत्वपूर्ण बताया है तथा इसके साथ ही शिक्षा को ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध करने का सुझाव दिया है। शिक्षा में उद्योग खासकर कताई को महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा ज्यादातर स्वावलम्बी होनी चाहिए और देहाती जीवन तक पहुँचने वाले उस जीवन के साथ सम्बन्ध रखने वाली होनी चाहिए।" इस प्रकार पाओलो फ्रेरे के जन शिक्षा के प्रायोगिक चिन्तन में विकासात्मक चिन्तन के विभिन्न शैक्षिक सोपानो से होता हुआ शिक्षा एक विकसित वट वृक्ष का स्वरूप प्राप्त कर लिया जो समग्र रूप में मानवीय हित के लिये सदियों तक जाना जायेंगा।

www.ignited.in

**ग्रामोद्योग प्रबंधन**

प्रारम्भ से ही ग्रामोद्योग से सम्बन्धित कौशलों का ज्ञान विभिन्न स्तर पर दिये जाने का प्रावधान बनाया गया था। जिसका उद्देश्य मौजूदा अस्वाभाविक आर्थिक रचना को उलटने का था। प्रारंभिक वर्षों में गरीबी को राहत पहुँचाने पर जोर था। इस के लिये पाओलो फ्रेरे का मानना था कि शहरी स्तर पर निवास करने वाले लोग विभिन्न कार्यों में व्यस्त एवं अभ्यस्त हो कर अपने जीविकोपार्जन में लगें हुये है किन्तु ग्रामिण स्तर पर गाँव के लोग बेकारी, अर्द्धबेकारी जैसी मुसीबतों का सामना कर रहें है और गरीबी में जीवन व्यतीत कर रहे है। ऐसी स्थिति में पाओलों फ्रेरे ने इन ग्रामीण लोगों के लिये ग्रामोद्योग जैसी कार्यों को बढावा देने हेतु सिलाई-कालाई, बुनाई, लकडी उद्योग, चर्म उद्योग, कपड़ा उद्योग, धातु उद्योग, मिट्टी के बर्तनों का उद्योग, रंगाई उद्योग, बगवानी उद्योग, कृषि उद्योग आदि पर बल देकर ग्रामीण लोगों को इससे जोडने एवं प्रशिक्षित करने पर बल दिया। इस कार्य से जहाँ व्यक्ति में कौशलों का विकास होता है, वहीं उनके लिये आर्थिक उपार्जन के मार्ग भी खुल जाते है, जिससे उनका पारिवारिक स्थिति मजबूत होती है। गाँव की अर्थ रचना हाथ कुटाई, हाथ पिसाई, साबुन, कागज, दियासलाई, चमड़े काम, तेलधानी, आदि आवश्यक ग्रामोद्योगों के बिना सम्पूर्ण नहीं हो सकती।

**ग्राम्य अर्थ प्रबंधन**

जब अर्थशास्त्र और जीवन में ग्रामदृष्टि का प्रवेश होगा, तब ग्राम्य वस्तुओं को अधिकाधिक उपयोग करने की ओर जनता का मन झुकेगा। अपने जीवन की आवश्यक वस्तुएँ गाँवों में तैयार कराने की ओर उसका झुकाव होगा। इसके फलस्वरूप गाँवों में ग्रामीण कला और औजारों को सुधारने की, गाँव के लोगों को सिखाने-पढ़ाने की, गाँव जंगल तथा खेती की पैदावार बढ़ाने की ज्ञान वाली प्रकृति पैदा होगी। पंचायत सहकारिता आदि का अर्थव्यवस्था के निर्माण में क्या योग है, इसकी पूरी मीमांसा पाओलो फ्रेरे ने की है। पाओलो फ्रेरे के आर्थिक चिंतन के आधार पर निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि पाओलो फ्रेरे एक ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे, जिससे भूमि और संपत्ति पर सबका समान अधिकार हो। व्यापार की प्रक्रिया को भी वे व्यक्तिगत नियंत्रण से हटाकर संस्थागत एवं सहकारी अथवा सरकारी करने के पक्ष में थे।

**शारीरिक श्रम प्रबंधन**

पाओलो फ्रेरे मानव के उथान एवं खुशहाल जीवन के व्यतीत करने के लिये मनुष्य के शारीरिक बल को भी प्राथमिकता प्रदान किया है। उनका मानना है कि शारीरिक श्रम के द्वारा व्यक्ति अपना तथा देश का विकास कर सकता है। शारीरिक श्रम प्रबंधन के द्वारा छोटे से छोटे एवं बडे से बडे कार्यों को सम्पादित किया जा सकता है और उस से आर्थिक खुशहाली प्राप्त किया जा सकता है। पाओलो फ्रेरे के शारीरिक श्रम प्रबन्धन का सीधा-साधा भावार्थ इतना ही है कि प्रत्येक आदमी खुद अपने पसीने की कमाई खाने लगे तो परालम्बन और गरीबों का शोषण बन्द हो जाय और किसी को किसी मनुष्य से उसकी शक्ति से अधिक काम न लेना पडे। शारीरिक श्रम के फल बहुत दूरगामी होते हैं। इस सिद्धान्त का सर्वत्र आचरण होने लगे तो दुनिया में समानता की स्थापना हो जाएँ, भुखमरी सदा के लिए नष्ट हो जाय और हम बहुत-सी समस्याओं से मुक्त हो जाये। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक श्रम के कर्तव्य का पालन करने लगें, तो ऊँच-नीच के भेद मिट जायें तथा पूँजी और श्रम का या अमीरों और गरीबों के बीच का संघर्ष शान्त हो जाय। अमीर तब भी रहेंगे, लेकिन उस स्थिति में वे अपने को अपनी संम्पति का ट्रस्टी मानने और उसका उपयोग मुख्यतः सार्वजनिक हित के लिए करेंगे।

**रचनात्मक प्रबंधन**

पाओलो फ्रेरे के जीवन-दर्शन के आधार भले ही धार्मिक ग्रंथ न रहें हों, परन्तु अपने मौलिक रूप से उनके जीवन-दर्शन आर्थिक विचार से अनुप्राणित हैं। यहाँ के कुटीर उद्योक, गृह उद्योग, लघु उद्योग और कृषि उद्योग आदि को धीरे-धीरे समाप्त कर रहा है और उसकी जगह औद्योगिक निर्भरता बढ़ती जा रही है। आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण भारत की सामान्य जनता के हितों में नहीं है। पाओलो फ्रेरे ने इस पक्षों पर गहराई से विचार किया तथा भारत की आर्थिक समस्याओं का विषद् विवेचन किया। उनका चिंतन एक व्यावहारिक आर्थिक चिन्तन था। उनके आर्थिक चिन्तन में आत्मवाद, समानतावाद के आदर्शवाद और यथार्थवाद का सम्मिश्रण है। उनका आर्थिक चिन्तन अहिंसा, अपरिग्रह, सर्वोदय, और सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्तों पर आधारित था। यही कारण है कि उनकी आर्थिक विचारधारा के मूल मंत्र आत्मनिर्भरता, विकेन्द्रित उत्पादन और समान वितरण हैं। वे पूँजीवाद की तरह केवल भौतिक मूल्यों पर जोर नहीं देते, बल्कि मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक संरक्षण पर भी जोर देते हैं। उनका कहा था कि समाज के हर वर्ग यथा किसान, मजदूर, दलित, कर्मकार, युवा वर्ग आदि सभी को जीवन के बहुआयामी पहलुओं की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे समाज के सभी वर्गों को आगे बढने का अवसर प्राप्त हो सके और सभी लोग खुशहाल जिन्दगी जी कर अपने राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकें।

## निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है की पाओलो फ्रेरे एक उच्च कोटी के दार्शनिक, शिक्षाविद्, आर्थिक चिन्तक के साथ-साथ जन कल्याण की भावना से ओत-प्रोत व्यक्तित्व के स्वामी थे जो अपनी चिन्तन शैली के द्वारा वैश्विक स्तर पर मानव के कल्याण हेतु अपनी दार्शनिक सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया साथ ही साथ जन शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों को प्रोत्साहित कर मानवीय मूल्यों को पूष्पित, पल्लवित तथा विकसित करने का सराहनीय कार्य किया। जन शिक्षा के साथ में मानव कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी थी। अर्थशास्त्र के उद्देश्य संबंधी इनकी धारणा मार्शल और रॉबिन्स आदि से सर्वथा भिन्न है पाओलो फ्रेरे ने मानव जीवन को पूर्ण रूप में देखा है और यही कारण है कि वे मानव जीवन को आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि विभिन्न अंगो को विभाजित करके अध्ययन करने के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था कि मानव जीवन के सभी पक्षों का अध्ययन एक साथ होना चाहिए। मनुष्य के कार्यों की परिधि अविभाज्य है तथा उसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक आदि विभिन्न वेर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता है यही कारण है कि पाओलो फ्रेरे के अर्थशास्त्र में व्यक्तिवाद, समाजवाद तथा नैतिकता का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। उनका कहा था कि समाज के हर वर्ग यथा किसान, मजदूर, दलित, कर्मकार, युवा वर्ग आदि सभी को जीवन के बहुआयामी पहलुओं की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे समाज के सभी वर्गों को आगे बढने का अवसर प्राप्त हो सके और सभी लोग खुशहाल जिन्दगी जी कर अपने राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकें।

## सन्दर्भ

निशान्त, रविशंकर - देशवासियों से दो बातें, सुलभ प्रकाशन, नवीन शाहदरा।

मार्क्स कार्ल - सेलोक्टिड राईटिंग्स इन सोशियोलॉजी एण्ड सोशल फिलासफी, अनु. बोटोमर, मेक्र ग्रा हिल, 1964।

पाओलो पाओलो फ्रेरे - नो एक्जिलिओफिकोउ माइज ब्रासिलियेरो एइन्डा, विवियन वौन

प्रसाद, रामायण - प्रौढ शिक्षा- शिक्षा का मूल अधिकार, भारतीय प्रौढ शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली, अक्टूबर, 1999।

पाण्डे, रामशकल - शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

पाण्डे रामशकल - महान पश्चिमी शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

एंजिला सिस्की - पाओलो राज्य में विद्यालय प्रशासन का विस्तार, एक एथेनोग्राफिक अध्ययन

के.जी.सैय्दन - भारत में प्रौढ़ शिक्षा विशेशांक, साहित्य परिचय, आगरा, 1978

कान्ता मारवा - प्रौढ़ शिक्षा उद्देश्य और शिक्षा पद्धति, प्रौढ शिक्षा विशेशांक साहित्य परिचय,आगरा 1978

**Corresponding Author**

**Dr. S. K. Mahto***

Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in